कपास समाचार

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर

खंड 27, क्र. 4ए खंड 28, क्र. 1

अक्तूबर 2011 से मार्च 2012

विश्व कपास अनुसंधान सम्मेलन – 5, आयोजित

डब्लू सी आरसी–5 के आयोजन पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन

माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री, श्री. शरद पवार जी उद्घाटन समारोह में संबोधित करते

माननीय केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री. विलासराव देशमुख प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए।

पाँचवे विश्व कपास अनुसंधान सम्मेलन (डब्लू सी आर सी–5) का सह आयोजन अंतरराष्ट्रीय कपास सलाहकार समिति, वाशिंगटन, डीसी, यूएएस तथा भारतीय कपास सुधार समिति द्वारा 7 से 11, नवंबर, 2011 को मुंबई में किया गया। इस सम्मेलन में 657 प्रतिनिधि सहभागी हुए जिसमें से 138 प्रतिनिधि विश्व के 30 देशों से जिसमें यूएसए, ऑस्ट्रेलिया, ब्राझील, इजराईल, चीन, जैसे बडे देश सम्मिलित थे। इस सम्मेलन का शुभारंभ 7, नवंबर, 2011 को श्री शरद पवार, कृषि मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री ने अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान नए प्रौद्योगिकियों के दीर्घकालिकता संबंधित समस्याओं की तरफ आकर्षित किया तथा कपास में अनुसंधान के कार्यों हेतु सरकार की ओर से पूर्ण सहायता का प्रस्ताव रखा। इस उदघाटन समारोह में श्री. विलासराव देशमुख, विज्ञान व प्रौद्योगिकि तथा भू–विज्ञान मंत्री, भारत सरकार, डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव डेअर एवं महानिदेशक, भाकृअनुपरि, श्री. ए. बी. जोशी, टेक्साटाईल आयुक्त, डॉ. टेरी टाऊन एवं, कार्यकारी निदेशक, आईसीएसी, डॉ. सी. डी. मायी, अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयोजन समिति, डब्लूसीआरसी–5, डॉ. के. आर. क्रांति, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय आयोजन समिति – डब्लूसीआरसी–5 एवं डॉ. ए. जे. शेख, सचिव राष्ट्रीय आयोजन सतिमि – डब्लूसीआरसी–5 एवं अन्य प्रतिनिधि उपस्थित थे।

डब्लू सी आरसी–5 के दौरान प्रकाशनों का विमोचन

अपने संबोधन में श्री. विलासराव देशमुख, केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने जैव–प्रौद्योगिकी विभाग का जैव–टेक फसलों के नियमन में पूर्ण सहयोग प्रदान करने की बात को दोहराया। इन्होंने कपास उत्पादन के क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर बल दिया तथा भारत सरकार द्वारा जैव–प्रौद्योगिकी के बढ़ावे हेतु

विषय सूची	
डीजी, भाकृअप का सीआइसीआर, नागपुर का दौरा	02
आरएसी की बैठक	03
किस्म शुध्दता परीक्षण पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण	03
कपास प्रौद्योगिकी सप्ताह आयोजित	04
कवीके अवलोकन	04
अनुसंधान सिंहावलोकन	06
कार्मिक	07
मानव संसाधन विकास	08
बैठकों में सहभागिता	08
पुरस्कार एवं सम्मान	08

डॉ. अय्यप्पन, डीजी, भाकृअप, डब्लूसीआरसी–5 में अपना संबोधन प्रस्तुत करते हुए।

पूर्ण वचनबध्दता को व्यक्त किया। डॉ. टेरी टाऊनसेंड, कार्यकारी निदेशक, आईसीएसी ने सभी मेहमानों का स्वागत किया तथा डब्लूसीआरसी के वर्ष 1994 से आयोजन के कारणों को बताया। इस सम्मेलन का प्रथम अनोखा आयोजन ग्रीस में हुआ था तथा इसके पश्चात प्रत्येक चार वर्षों में अर्थात 1988 में ऑस्ट्रेलिया, 2003 में दक्षिण अफ्रिका, तथा 2007 मे यूएएस। डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भाकृअन, तथा सचिव डेअर, नई दिल्ली नें भाकृअप की ओर से आगंतुकों का स्वागत किया तथा राष्ट्रीय आयोजन समिति को उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई दी तथा भाकृअप का कपास अनुसंधान के क्षेत्र में वर्तमान लक्ष्य के विषय में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। श्री. ए. बी. जोशी, टेक्सटाईल आयुक्त, जिन्होंने वस्त्र मंत्रालय का प्रतिनिधित्व किया नें भारत की अर्थव्यवस्था में टेक्सटाईल सेक्टर के योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा फसल कटाई उपरान्त तत्कालिक क्षेत्रों में अनुसंधान आवश्यकताओं को भी बताया। डॉ. सी. डी. मायी, अध्यक्ष राष्ट्रीय आयोजन समिति ने प्रथमतः सभी मेहमानों का स्वागत किया तथा मुंबई में एवं भारत में प्रथम बार डब्लूसीआरसी–5 के आयोजन के महत्व को स्पष्ट किया। डॉ. के. आर. क्रांति, डॉ. फ्रेड बोरलैण्ड एवं डॉ. सुकुमार साहा का इस अवसर पर सम्मान किया गया क्योंकि इन्हें क्रमशः वर्ष 2009, 2010 तथा 2011 में वर्ष का अंतरराष्ट्रीय कपास अनुसंधान करता पुरस्कार प्रदान किया गया था। उदघाटन समारोह के दौरान, सारांश पुस्तक, सोवेनिर तथा सम्पूर्ण शोध पत्रों की सीडी को भी विमोचित किया गया। उदघाटन समारोह में डब्लूसीआरसी–5 के आयोजन समिति द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया तथा डॉ. के. आर. क्रांति, उपाध्यक्ष डब्लूसीआरसी–5 एवं निदेशक, सीआईसीआर, नागपुर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

तकनीकी प्रस्तुतीकरण के अलावा, लगभग 25 भारतीय तथा विदेशी वाणिज्य संस्थाओं नें अपने उत्पादों जिसमें बीज से लेकर कपड़ो को भी सम्मिलित किया गया था का प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन से अनेक वाणिज्यिक व्यक्तियों को बीज, मशीन, वस्त्र, उपकरण, इत्यादि नवीन प्रौद्योगिकी से समागम का अवसर प्राप्त हुआ। सम्मेलन के पश्चात दौरे के कार्यक्रम के अनुसार नागपुर में 43 व्यक्तियों नें सीआईसीआर, नागपुर के प्रायोगिक फार्म का दौरा 12 से 13, नवंबर, 2011 को किया जिसमें बारानी कृषि एवं आधुनिक कपास संसाधन उद्योगोंका दौरा किया गया।

डॉ. सी. डी. मायी, पूर्व अध्यक्ष, एएसआरबी, द्वारा डब्लूसीआरसी–5 में एकत्रित समूह को संबोधन

महानिदेशक, भाकृअप द्वारा सीआईसीआर, नागपुर का दौरा

डीजी, भाकृअप द्वारा प्रशिक्षण छात्रावास शिलान्यास

जैव–प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला का डीजी, भाकृअप द्वारा अनावरण

डॉ. एस अय्यप्पन, सचिव, डेअर एवं डीजी, भाकृअप, नई दिल्ली नें सीआईसीआर, नागपुर का दौरा 11, दिसंबर, 2011 को किया। डॉ. सिंगनधुपे, कार्यक्रम समन्वयक, केवीके, सीआईसीआर, नागपुर ने केवीके में विदर्भ के कृषकों के लाभार्थ चलाए जा रहे विभिन्न गतिविधियों को डीजी के समक्ष प्रस्तुत किया। डीजी द्वारा केवीके प्रशिक्षण छात्रावास का शिलान्यास, डॉ. एम. एम. पांडेय, डीडीजी (अभियंत्रिकि) भाकृअप, डॉ. सी. डी. मायी, पूर्व एएसआरबी अध्यक्ष एवं डॉ. के. आर. क्रांति की उपस्थिति में किया गया। दीर्घ कालिक प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु के लिए केवीके में आने वाले देश के दूसरे राज्यों के प्रशिक्षणार्थियों के आवासीय व्यवस्था में यह कृषक आवास से सुविधा प्राप्त होगी। इस अवसर पर डॉ. सी. एस. प्रसाद, कुलपति, एमएएफएसयू, डॉ. शेख, निदेशक, सिरकाट, डॉ. दीपक सरकार, निदेशक, एनबीएसएस व एलयूपी तथा डॉ. वी. जे. शिवनकर, निदेशक, एनआरसीसी भी उपस्थित थे। इसके साथ साथ इन लोगों ने केवीके, सीआईसीआर, नागपुर, प्रौद्योगिकी पार्क, फल एवं सब्जी केफेटेरिया, उस्मानाबादी बकरी पालन प्रकोष्ठ, मूर्गी पालन एकक जिसमे वनराज, गिरीराज, कडकनाथ किस्में थी, मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, एवं गृह विज्ञान प्रयोगशाला का भी दौरा किया। माननीय महानिदेशक नें चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों का पुनरनिरिक्षण किया एवं केवीके द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। डॉ. एस. अय्यप्पन का यह अभिमत था कि केवीके एक मूलभूत स्तर की संस्था है जिसे प्रौद्योगिकियों के आकलन, परिमार्जन एवं प्रमाणित प्रौद्योगिकी के निदर्शन तथा कुछ का विभिन्न सूक्ष्म परिस्थितियों में प्रशिक्षण हेतु बनाया गया है।

डाजी, भाकृअप द्वारा सीआईसीआर, नागपुर का दौरा

सीआईसीआर के दौरे के समय डॉ. अय्यप्पन ने जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला का भी उद्घाटन किया। इस प्रयोगशाला को सभी सुविधाओं एवं आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित किया गया है। इस सुविधा द्वारा कपास जैव प्रौद्योगिकी के जन क्षेत्रा में बढ़ावा प्राप्त होगा। बीटी किटों, जीवविज्ञानीय नियंत्रण द्वारा कीट नियंत्रण तथा मिलीबग प्रबंधन हेतु

सूत्रीकरणों जैसे मिली क्विट एवं मिली किल सूत्रीकरनों के लिए किए गए अनुसंधान कार्यों से डीजी काफी प्रभावित थे। डीजी नें अन्य प्रयोगशालाओं जैसे आण्विक चिह्नक, आण्विक रोग विज्ञान, बीज प्रौद्योगिकी एवं मृदा सूक्ष्मजैविकी का भी दौरा किया। इस प्रयोगशाला दौरे की समायोजना डॉ. संध्या क्रांति, प्रमुख, फसल सुरक्षा विभाग, डॉ. एस. बी. सिंह, प्रभारी प्रमुख, फसल सुधार विभग, डॉ. ब्लेज डिसूजा, प्रमुख, फसल उत्पादन विभाग द्वारा किया गया। इसके पश्चात डीजी नें संस्थान के वैज्ञानिकों को संबोधित किया तथा अगले तीन वर्षों मे 1000 किलो ग्राम रूई प्रति हेक्टेयर के लक्ष को प्राप्त करेन हेतु प्रोत्साहित किया। इस संस्थान द्वारा किए गए कार्यों की इन्होंने समालोचना की क्योंकि इनके कार्यों को पूर्ण विश्व में पहचाना गया

आरएसी बैठक आयोजित

वर्ष 2012 के लिए अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की बैठक डॉ. एस. के. पाटिल अध्यक्ष, कर्नाटक किसान आयोग, पूर्व निदेशक, आईएआरआई एवं पूर्व कुलपति, यूएएस धारवाड, की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में आरएसी सदस्यों में श्री. सुरेश वारपुडकर, पूर्व मंत्री, कृषि, महाराष्ट्र, डॉ. वी. कुमार, प्रमुख, कपास अनुसंधान स्टेशन, सूरत, डॉ. जाधव, पूर्व निदेशक पूर्व निदेशक, विस्तार, एमएयू, परभणी, डॉ. गोपालकृष्णन, एडीजी (सीसी), भा.कृ.अ.प., डॉ. एस. श्रीवास्तव, पूर्व निदेशक, सिरकाट, एवं डॉ. एम. वेणुगोपालन, प्रधान वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान, सीआईसीआर सदस्य सचिव के रूप में सम्मिलित हुए। अपने प्रारंभिक प्रबोधन में डॉ. एस. ए. पाटील नें बीटी नैदानिक के विकास एवं इसके वाणिज्यिकरण के लिए सीआईसीआर के योगदान की सराहना की। इन्होंने कपास सुधार के कार्यों की धीमी गति पर अपनी चिंता व्यक्त की। इन्होंने महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यक्तिगत तथा सरकारी भागीदारिता तथा जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्रा में आंतरराष्ट्रीय संयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. वेणुगोपालन नें किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिस को चर्चा के उपरान्त आरएसी अध्यक्ष तथा सदस्यों द्वारा अनुमोदित किया गया। डॉ. क्रांति नें देश में तथा वैश्विक स्तर पर कपास की स्थिति को प्रस्तुत किया। इन्होंने संस्थान के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को प्रस्तुत किया जो इस प्रकार हैं।

- उच्चतम उपज 50 क्विंटल / हेक्टेयर को प्राप्त करना
- सूविन एवं डीसीएच 32 से बेहतर महीन कपास का उत्पादन
- तेल मात्रा एवं अजैविक प्रतिबल के लिए नए जीनों की खोज
- नए कपास चुनाई यंत्र का निर्माण
- कपास उपज निर्धारण प्रतिमान
- नवीन मिशन मोड कार्यक्रम – राष्ट्रीय कपास चुनौतियाँ मिशन 2 तथा पाँच उप कार्यक्रम
- सघन रोपाई प्रणाली द्वारा उपज में वृध्दि
- देशी कपास का नविनीकरण
- जैविक कपास के क्षेत्र में भारत के वैश्विक नेतृत्व का दृढ़ीकरण
- अतिरिक्त लंबाई युक्त कपास की भारत में पुनः कृषि
- भारत के जन क्षेत्रों में स्वदेशी बहुजीनी ''सुपर बीटी कपास'' किस्मों का एचडीपीएस बारानी प्रणाली के लिए विकास

इस प्रस्तुतीकरण के पश्चात, फसल उत्पादन विभाग, फसल सुरक्षा विभाग, फसल सुधार विभाग तथा क्षेत्रीय स्टेशन कोयंबतूर एवं सिरसा के प्रमुखों नें प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया। प्रस्तावित महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए कार्यक्रमों का सिंहावलोकन विभाग प्रमुखों द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन प्रस्तुतीकरणों के पश्चात वैज्ञानिकों में खुली चर्चा का सत्र आयोजित किया गया जिससे कपास क्षेत्र की अनुसंधान समस्याओं में झांका जा सके। डॉ. एन. गोपालकृष्णन, एडीजी (सीसी) ने परिषद के विचारों को व्यक्त किया जिसमें निर्दिष्ट कार्यों के प्रति अधिक उत्तरदायित्व और वचनबध्दता की आवश्यकता है। इन्होंने पीएमई प्रकोष्ट को अधिक सक्रिय होने के लिए निवेदन किया तथा इस बात पर भी बल दिया कि एचआरडी के अंतर्गत किए जा रहे गतिविधिया संस्थान के लक्ष्यों के अनुरूप ही होनी चाहिए। अध्यक्ष तथा सदस्यों में किए जा रहे कार्यों का विस्तृत अवलोकन किया तथा महत्वपूर्ण सलाह भी प्रस्तुत किए।

निर्दिष्ट विशेषकों का किस्मों में शुध्दता परीक्षण पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण

राष्ट्रीय निर्दिष्ट विशेषकों का किस्मों में शुध्दता परीक्षण पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

कार्यक्रम का आयोजन जनवरी 31 से फरवरी 4, 2012 तक किया गया। विभिन्न संस्थानों एवं कृषि विश्व विद्यालयों से 30, सहभागियों नें इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस प्रशिक्षण का उद्‌घाटन डॉ. वी. जे. शिवनकर, निदेशक नींबू वर्गीय फल अनुसंधान केन्द्र, नागपुर द्वारा 31, जनवरी, 2012 को किया गया। इस कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. दीपक सरकार, निदेशक, एनबीएसएस व एलयूपी, नागपुर द्वारा की गई।

किस्मीय शुध्दता परीक्षण के राष्ट्रीय प्रशिक्षण में उपस्थित सहभागी

डॉ. दीपक सरकार, निदेशक, एनबीएसएस व एलयूपी द्वारा प्रशिक्षण पुस्तिका का विमोचन

आयोजित कपास प्रौद्योगिकी सप्ताह

विदर्भ क्षेत्र के कृषकों के लाभार्थ ''कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी'' पर सीआईसीआर, नागपुर द्वारा ''कपास प्रौद्योगिकी सप्ताह'' के अंतर्गत किया गया जिसमें एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला सम्मिलित थी। यह कार्यक्रम 21 से 26, नवंबर, 2011 को कृषि विज्ञान केन्द्र, नागपुर द्वारा आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्‌घाटन डॉ. सी. डी. मायी, पूर्व एएसआरबी अध्यक्ष, नई दिल्ली नें 21, नवंबर, 2011 को किया। बीटी कॉटन, यांत्रिक फसल उत्पादन, खरपतवार, जल एवं पोषक प्रबंधन,

पर्ण लालीमा, मुरझान प्रबंधन,नए कीट नाशक एवं आईपीएम, जैव नियंत्रण, नाशी जीव एवं रोग प्रबंधन, बीटी परीक्षण विधियाँ, बीजी–2, बीजी–ष्ष तथा जैविक व देशी कपास के उत्पादन जैसे विषयों पर संसाधन व्यक्तियों द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किए गए। कृषकों को प्रयोगशालाओं व कपास प्रक्षेत्रों में प्रयोगात्मक निदर्शन हेतु भी ले जाया गया। इस कपास प्रौद्योगिकी सप्ताह में चंद्रपुर, अकोला, यवतमाल, वर्धा एवं नागपुर जिलों के लगभग 300 कृषक सम्मिलित हुए तथा इसका लाभ उन्हे मिला। इस कार्यक्रम के समापन समारोह में डॉ. (श्रीमती) संध्या क्रांति, विभाग प्रमुख, कपास सुरक्षा विभाग, सीआईसीआर, नागपुर नें वास्तविक नवीन तथा परीक्षित कपास तकनीकियों को अच्छी गुणवत्ता एवं कपास के अधिक उपज व कम लागत हेतु अपनाने पर बल दिया। डॉ. (श्रीमती) संध्या क्रांति नें कृषकों को सीआईसीआर के लगातार संपर्क में रहने का अनुरोध किया जिससे विकसित की गई नई कपास प्रौद्योगिकी को शीघ्रात शीघ्र हस्तांतरित किया जा सके। डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे, कार्यक्रम समनव्यक, केवीके ने संस्थान में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव को प्रस्तुत किया। इस बैठक का संचालन, डॉ. तायडे द्वारा किया गया एवं डॉ. यू. वी. गलकाटे नें धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

उद्घाटन समारोह में कृषकों को संबोधित करते हुए डॉ. सी. डी. मायी, भूतपूर्व, एएसआरबी, अध्यक्ष,नई दिल्ली

जनजातीय उप योजना के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

जन जातीय कृषकों के लिए जनजातीय उपयोजना के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम (टीएमसी) का आयोजन डॉ. विनीता गोतमारे, नोडल अधिकारी (टीएमसी) द्वारा किया गया। दिनांक 17, फरवरी, 2012 को हिंगणा ब्लॉक, जिला नागपुर के 25 ग्राम विकास सदस्यों के लिए एक परिचायक दौरे का आयोजन किया गया। इन्हें जन जातीय उप योजना एवं संस्थान तथा केवीके द्वारा परिचालित अनुसंधान योजनाओं के विषय में संक्षेप में बताया गया। कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी जिसमें कपास की गुणवत्ता तथा उपज वृध्दि, मृदा परीक्षण, सिचाई तकनीकी एवं कृषक महिलाओं के स्वस्थ्य संबंधी चर्चा पर विशेष बल दिया गया। ''कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी मे नवीन विकास'' विषय पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, हिंगणा तहसील के ग्रामों के 100 जनजातीय किसानों व गढ़चांदूर जिला चंद्रपुर के आस–पास के छः ग्रामों के 353 जनजातीय किसानों 10, फरवरी, 2012 को सीआईसीआर, नागपुर द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के वक्ताओं में डॉ. संध्या क्रांति, प्रभारी निदेशक व विभाग प्रमुख, फसल सुरक्षा विभाग, डॉ. ब्लेज डिसूजा, विभाग प्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, डॉ. सुमन बाला सिंह, प्रभारी विभाग प्रमुख, फसल सुधार विभाग, डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे, डॉ. एस. एम. वासनिक, डॉ. वी. एन. वाघमारे, डॉ. विनीता गोतमारे व डॉ. विश्लेष नगरारे सम्मिलित थे।

जिले क किसानों को मृदा परीक्षण के महत्वों के विषय में बताते हुए श्री. एच. बी. कुंभलकर

केवीके सिंहावलोकन

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

निम्मलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन केवीके के द्वारा किए गए

क्रमांक	दिनांक	विषय	स्थान	भागीदारों की संख्या	समनव्यक का नाम
1	11.10.2011	नागपुरी संतरे के लिए आईएनएम	उबाली	20	गुलबीर सिंह
2	04.11.2011	स्वच्छ कपास चुनाई की विधी	महागाँव, कालडोंगरी, बोरूजवाड़ा	63	एस. चव्हान
3	06.11.2011	श्रम घटाने के लिए सुधारित हसिये का उपयोग	माओरी	23	एस. चव्हान
4	12.11.2011	गुलाब की कलम विधि	केवीके	11	गुलबीर सिंह
5	15.11.2011 से 19.11.11	मूल्य सवंर्धित उत्पादनों के निर्माण की विधी	मानोरी व पीपरा	53	एस. चव्हान
6	29.11.2011	दुग्ध देती गायों के लिए चिलेटेड खनिजों का प्रयोग	डोंगरगाव	21	यू. वी. गलकाटे
7	29.11.2011	प्याज व लहसून की कृषि	थाना, रानमांगली	19	गुलबीर सिंह
8	29.11.2011	पोषक बागीचे का विन्यास व प्रबंधन	क्वीके	33	एस. चव्हान
9	30.11.2011	अमरूद उगाना	केवीके	29	गुलबीर सिंह
10	16.12.2011	घरेलू मूर्गी पालन में सुधारित देशी प्रजाति का उपयोग	नवेगाँव साधू	21	.यू. वी. गलकाटे
11	17.01.2012	सुधारित देशी प्रजाति के पालन से घरेलू मूर्गी पालन की स्थापना	केवीके	30	यू. वी. गलकाटे
12	14.02.2012	गयों एवं भैसों के लिए कम मूल्य खाद्यान्न का सूत्रीकरण	थाना (उमरेड)	15	यू. वी. गलकाटे
13	16.03.2011	नीबू वर्गीय फलों की तुड़ाई, कटाई व विपणन	केवीके	15	गुलबीर सिंह
14	17.03.2012	स्वरोजगार हेतु रोपवाटिका की स्थापना	केवीके	17	गुलबीर सिंह
15	19.03.2012	बीटी कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी	केवीके	33	ए. एस. तायडे

<u>प्रायाजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन</u>

केवीके, सीआईसीआर, नागपुर द्वारा निम्नलिखित प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

क्रमांक	दिनांक	ग्राहक	संख्या	विषय	प्रायोजक संस्था
1	02.03.2012	विस्तार कार्यकर्ता	22	कपास में चूषक कीटों का प्रबंधन	राज्य कृषि विभाग जिला. पूर्व गोदावरी. ए. पी.
2	09.03.2012	कपास कृषक	32	कपास पर आईपीएम	राज्य कृषि विभाग, जिला. कालाहांडी व नुआपाड़ा, उडीसा
3	16.03.2012	कपास कृषक	32	कपास पर आईपीएम	राज्य कृषि विभाग, जिला. हरदा, म.प्र.
4	28.03.2012	कपास कृषक	70	बीटी कपास में चूषक कीटों का प्रबंधन	राज्य कृषि विभाग, तहसील–भिवापूर जिला. नागपुर, एम.एस.
5	30.03.2012	कपास कृषक	30	बीटी कपास में चूषक कीटों का प्रबंधन	राज्य कृषि विभाग, तहसील–भिवापूर जिला. नागपुर, एम.एस.

निम्न लिखित नैदानिक सर्वेक्षणों का आयोजन किया गया

क्रमांक	दिनांक	विषय	लाभग्राही
1	11.10.2011	नागपुरी संतरे के फलों का गिरना	01
2	29.11.2011	संकरीत गायों में मस्टीसिसव घरेलू मूर्गीयों में बिमारियाँ	17
3	06.12.2011	ऑवला मुरब्बे में फफूंदी का लगना	13
4	08.12.2011	सोया दुग्ध का फटना	10
5	14.02.2012	मिर्ची की कृषि, घरेलू मूर्गीयों का चारा व प्रबंधन विधियाँ	9
6	03.03.2012	मूर्गीपान व पशु पालन	11
7	13.03.2012	बैल एवं गाये	6
8	13.03.2012	बैल एवं गाये	6

प्रदर्शनियों में सहभागिता

- केवीके, सीआईसीआर, नागपुर द्वारा कृषि प्रदर्शनी में 5 से 7 अक्तूबर, 2011 दीक्षा भूमि, नागपुर में सहभागिता की गई, जिसका आयोजन राज्य कृषि विभाग द्वारा किया गया था। 1200 से अधिक किसानों ने सीआईसीआर के स्टॉल को भेट दी।
- एग्रो–टेक–2011 में केवीके सम्मिलित हुआ जिसका आयोजन डॉ. पीडीकेवी,अकोला द्वारा डॉ. पंजाबराव देशमुख के जन्मोत्सव पर इनके क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र सोनापुर, गढचिरोली में 27 से 29, दिसंबर, 2011 में किया गया था। डॉ. आर. आर. गुप्ता एसएमएस, पादप सुरक्षा इस प्रदर्शनी में सम्मिलित हुए।
- राष्ट्रीय एग्रो–विजन, प्रदर्शनी में केवीके, सीआईसीआर सम्मिलित हुआ जिसका आयोजन 27 से 30, जनवरी, 2012 को रेशिमबाग, नागपुर में किया गया था।

आयोजित किसान मेला

केवीके नें अपने द्वारा अपनाए ग्राम मानोरी, तहसील उमरेड, जिला नागपुर में 21, जनवरी, 2012 को एक किसान मेले का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में लगभग 150 से अधिक किसानों नें भाग लिया। दलहनों (तूअर व चना) के उत्पादन प्रौद्योगिकी में सुधार इस मेले का विषय था। डॉ. जी. सी. मालवी, पीडीकेवी के सेवानिवृत्त सस्य विज्ञान के प्राध्यापक तथा डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे, केवीके के कार्यक्रम समन्वयक नें किसानों को संबोधित किया। किसानों के प्रश्नों का समाधान डॉ. राम रतन गुप्ता डॉ. पी. बी. देऊलकर एवं श्री. हरीष कुंभलकर द्वारा किया गया। ''शिवार फेरी'' के प्रारंभ में कृषक के अरहर एवं चने के खेतों के दौरे का कार्यक्रम भी रखा गया।

पिपरा में आयोजित किसान मेले के दौरान डॉ. जी. सी. मालवी कृषकों को संबोधित करते हुए।

कपास उत्पादकों के लिए आयोजित कार्यशाला

''उन्नत कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी'' पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन केवीके, सीआईसीआर, नागपुर एवं राज्य कृषि विभाग (टीएओ, कामठी) के सामंजस्य से एटीएम मे कार्यक्रम के अंतर्गत 28, फरवरी, 2012 को किया गया। कामठी तहसील, नागपुर जिला के 115 कपास उत्पादक किसानों नें इस कार्यशाला में सक्रियता पूर्वक भाग लिया। इस कार्यशाला के प्रारंभिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. (श्रीमती) संध्या क्रांति, नें की तथा डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे, पी.सी., केवीके, नागपुर, श्री. सुबोध मोहरिल, टीएओ इस अवसर पर उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के तकनीकी सत्रा में डॉ. ए. आर. राजू, डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे, डॉ. आर. आर. गुप्ता एवं श्री. एच. बी. कुंभलकर नें उन्नत कपास उत्पादन सें संबोधित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। इस प्रशिक्षण के समन्वयक डॉ. यू. वी. गलकाटे, एसएमएस, (पशु विज्ञान), केवीके, सीआईसीआर थे।

डेअरी उत्पादन पर आयोजित प्रशिक्षण

गहन डेअरी किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन पशु पालन विभाग, पंचायत समिति, काटोल, जिला नागपुर के सौजन्य से ग्राम गोंडीदिग्रस में 16, मार्च, 2012 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन श्री. राजेन्द्र गुलाबराव महंत के डेअरी फार्म पर आयोजित किया गया था। श्री. महंत एक नवोन्वेषी कृषक है तथा अपने डेअरी का सफलता पूर्वक परिचालन करते हैं। इन्हें केवीके, नागपुर द्वारा कुशल प्रशिक्षक कृषक के रूप में पहचान प्रदान की गई है। डॉ. यू. वी. गलकाटे, एसएमएस (पशु विज्ञान), केवीके, नागपुर नें ''डेअरी उत्पादन'' पर डेअरी कार्य में संलग्न आस पास के ग्रामों के 45 दुग्ध उत्पादक किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

डॉ. श्रीमती संध्या क्रांति, विभाग प्रमुख, फसल सुरक्षा विभाग, सीआईसीआर, नागपुर कृषकों को संबोधित करते हुए।

इस अवसर पर गेहूँ के तने का यूरिया उपचार तथा मशीन दोहन द्वारा शुध्द दुग्ध उत्पाद पर भागीदारों के प्रयोगात्मक कुशलता प्रदान करने हेतु निदर्शन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. वानखेडे, जिला पशुपालन अधिकारी, जिला परिषद, नागपुर तथा डॉ. कदाने, एलडीओ (विस्तार), पंचायत समिति, काटोल उपस्थित थे।

डॉ. यू. वी. गलकाटे द्वारा कृषकों को संबोधन

अनुसंधान सिंहावलोकन

मध्य भारत में कपास पर तीन गौण नाशी कीटों को दर्ज किया गया तीन गौठा नाशी कीटों अर्थात मिलीबग फेरीशिया विरगाटा (काकेरेल) हेमीपटेश: सुडो काक्कीडे), मिरिड बग क्रियोनटीयेडस वाईसिरेन्टेंस (डिसटेंट) (हेमीपटो: मिरिडे) एवं ग्रीन केविल टेनीमीकस प्रिंसेप्स (फाउस्ट) (कोलियोपटेरा : कुरकुली ओनीडी) को मध्य भारत में 2011–12 में दर्ज किया गया। फेरीसिया विरगाटा द्वारा कपास पौधों को सवंमित किया गया, इस कीट की सुगमता से पहचान इसके शरीर का सफेद मोम द्वारा ढका होना तथा कमर से नीचे पृष्ठभाग पर युगलपट्टे व लंबी तंतूदार पूंछ से की जा सकती है। यह पौधे के हिस्सों, पत्तियों, तना, फल एवं जड़ से रस को चूस लेता है जिससे पौधा मुरझा जाता है व इनकी संख्या में की आ जाती है। इस नाशी कीट को विश्व क सभी भागों में दर्ज किया गया है तथा यह विभिन्न प्रकार के परपोषी जिसमें आलू, कॉफी, नींबू, अमरूद, टमाटर, कपास पटसन, इत्यादि सम्मिलित हैं।

मिरीडबग क्रिओनटीएड्स बाईसिरेटेन्स जिसे विशेषतः तमिलनाडू एवं कर्नाटक के कपास उत्पादक राज्यों में प्रमुखता से पाया जाता था अब इसे मध्य भारत में भी कम संख्या में देखा गया है। यह विकसीत हो रहे पुष्प कलिकाओं एवं नर्म बॉल को हानि पहुंचाता है। पुष्प कलिका पर इस नाशी कीट के संक्रमण को कलिका में से निकलते हुए पीले रंग के द्रव्य से एवं अंदरूनी सहपत्र पर पीले रंग के धब्बों से पहचाना जा सकता हैं इस नाशी

कीट के संक्रमण से स्कवेअयरस् व बॉलों का भीषण पतन होता है जिससे कपास की उपज में लगभग 90 किलोग्राम/हेक्टेयर तक की कमी आती है।

हरा वेविल टेनीमिकस प्रिंसेप्स (कोलियोपटेरा : कुरकुलिओनिडे) को पत्तियों,स्केअरस् तथा गैर मौसम मई–जून मे अर्बोरियम किस्मों के तनों को खाते पाया गया है। इस नाशी कीट को कपास के फसल मौसम के दौरान नहीं देखा गया जिसका कारण संभवतः अन्य परपोषी की उपलब्धता है तथा यह केवल गैर फसल मौसम में ही कपास पर चरता है। यह नाशी कीट अप्रममुख किस्म का है परन्तु इसकी अनुविक्षण की आवश्यकता है। कीट पहचान की सेवाओं हेतु डॉ वी. वी. रामामूर्ति, आईएआरआई को साद आभार व्यक्त किया जाता हैं।

वी. एस. नगरारे, ए. जे. देशमुख, एस.वी. नंदेश्वर, वाई. वी. नंदेश्वर एवं एस. क्रांति

सिरसा हरियाणा में मिलीबग ड्रोसिचा प्रजाति की घटनाए:

रोहाडीवली, साइवाला–1 बकेरियावली तथा डिंगमण्डी जिला सिरसा स्थानों हरियाणा उत्तर क्षेत्र में एक नए मिलीग को देखा गया है। पिछले फसल काल में इस मिलीबग को जय बीटी के कुछ पौधों पर क्षेत्रीय स्टेशन में देखा गया था तथा इस वंश को ड्रोसिचा के प्रजाति के रूप में पहचाना गया था। अकेझिया (बबूल) तथा जिजिफस (बेर) के आसपास में उपलब्ध पेड़ों, जिनपर इनका भीषण संक्रमण था, से इनका प्रवजन हुआ है। इस प्रजाति की सभी अवस्थाओं को कपास पर पाया गया है। इस मिलीबग के नमूनों को पहचान हेतु कीट पहचान सेवाएं, आईएआरआई,नई दिल्ली में भेजा गया है तथा इसके प्रजाति के पहचान के निर्णय की प्रतिक्षा की जा रही है।

पहचान के गुणधर्मः

10 मि.मी. तक बड़ा शरीर, सामान्यतः अंडाकार लंबमान, पैर तथा स्पर्श श्रृगिका काले एवं स्पष्ट, तना शाखए अथा पौधे के पत्तों पर रहने वाले, शरीर सामान्यतः मोम जैसे पदार्थ से ढंका हुआ, यदा कदा बिना मोम के भी तथा प्रायः अंडपुटिका अथा शिशुधानी के साथ। मिलीबग वंश की सक्रिय अवस्था बिना मोम की होती है परन्तु सामान्यतः परजीवी पर स्थापित किस्म महीन मोम की परत में लिपटी हुई थी।

हानि की प्रकृतिः

मिलीबग के अन्य प्रजातियों की तरह यह प्रजाति भी पौधे के सभी भागों से रस को चूसती है तथा एसे पदार्थ को उत्सर्जित करती है जिससे सवंमित हिस्सों में मोल्ड की संख्या में वृध्दि होती है। सवंमित स्थानों में पौधे काले पड़ जाते हैं। मिलीबग फीनोकाकस सोलेनाप्सिस कपास के पौधे के उपरी नरम हिस्से को प्राथमिकता देता है जबकि यह मिलीबग को कपास के कठोर व निचले तने पर प्रचूरता में देखा गया है। पेड़ो मे भी यह प्रजाति तने पर ही पायी गयी है। पीसोलेनोप्सिस की तुलना में मिलीबग की यह प्रजाति अधिक सक्रिय है तथा यह एक पौधे से दूर से पौधे पर एक फसल से दूसरे फसल पर चलती है।

वैकल्पिक परपोषी:

अभी तक बागवानी, खरपतवार एवं फसली पौधों के 45 वैकल्पिक परपोषी पौधों की पहचान की गयी है जिसपर इस मिलीबग का संक्रमण दर्ज किया गया है। इस मिलीबग के वैकल्पिक परपोषी में प्रमुखतया प्रजाति बहुवर्षी प्रकार की हैं जो इस प्रजाति को वर्ष भर आधार प्रदान कर सके।

संबंध्द प्राकृतिक शत्रु:

प्रक्षेत्र से भारी संख्या में मिलीबग को एकत्रित किया गया तथा कोकीनिलेड परभक्षी की गतिविधियों का अवलोकन किय गया।

रिषीकुमार, रामसिंह व डी मोंगा

कपास पर्ण कुंचन (सिलेप्टा डेरोगाटा फेब) के लिए विकसीत जीन प्रकार एवं जननक्रय किस्मों का संवीक्षा:

कुल 58 प्रविष्टियों में से (28 गॉसीपियम हिर्सुटूम व 19 बीजी बार्बेडेंस जीन प्रकार तथा 11 जी. हिर्सुटूम जननद्रव्य किस्मों) जिन्हें कपास पर्ण कुंचन प्रतिरोधिता सहनशीलता के लिए संविक्षित किया गया था, एस. डेरोगाटा के तेईस प्रविष्टियों अर्थात सीसीबी 20, सीसीबी 23, सीसीबी 24, सीसीबी 25, सीसीबी 26, सीसीबी 1–1, सीसीबी 5, सीसीबी 11, पीआईएमए 121, सुडोन 436, आईसीबी 125, जीएसबी 39, सीसीबी 17, सीसीबी 18, व आईसीजीएच 370 को पर्ण कुंचन के प्रति मुक्त पाया गया जबकि मानक किस्मों एलआरए 5166, एमसीयूएकवीटी (सी) व सूरज (सी) में क्रमशः 57.5, 60.0 एवं 67.5 प्रतिशत संक्रमण देखा गया।

टी. सुरूलिवेन, टी. सोनाथी राजन, बी. धराजोथी व ए. कार्तीकेयनें

एकल कपास फसल के उपज में स्थिरता का बाजरा चक्र में शामिल करने के चक्रानुक्रम से परिवर्तन:

कपास को लगातार एक ही भूमि में उगाने से तथ बिना फसल चक्र में परिवर्तन के कारण इसकी उपज में समय के साथ कमी होती जा रही थी। इस से संबंधित अध्ययन का पुनरावलोकन करने के ज्ञात होता है कि कपास का अनाज/बाजरा के साथ फसल चक्रानुक्रम बेहतर परिणाम देता है न कि परती या अन्य उपाय। बारानी क्षेत्रों में प्रत्येक वर्ष केवल कपास उगाने की परिपाटी देखी गयी है क्योंकि सीमित वर्षा के कारण दूसरी फसल उगाई ही नहीं जा सकती है। अतएव अन्य मौसम में कम समय की कुछ फसलों तथा अनाज/बाजरा उगाने कपास उत्पादन प्रणाली को दीर्घकालिक बनाने का एक सक्षम उपाय है। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अन्य मौसम में उगाने हेतु फसलों के चुनाव के लिए बाजरे को गमलों में उगाकर परिणाम देखे गये। इस परीक्षण में सिमिमलित फसलों में इलुसिन कोराकाना, सिटेरिया इटालिका, पासपालुम स्क्रोवीलुलेटम, पेनिकम मिलिथेर, इकिनोक्लेआ कोलोना, पेनिकम मिलीयेसियम तथा नियंत्र (कपास–परती) को सम्मिलित किया गया था। कपास के खेतों से मिट्टी एकत्रित की गयी थी। इन चयनित फसलों को लगातार दो वर्षों तक गमलों में उगाया गया तथा 45 दिनों के पश्चात इनके स्थान पर इसी मिट्टी में उचित मौसम में कपास के पौधे लगाए गए। कपास का सिटेरिया इटेलिका पेनिकम मिलिथेर, पेसपालुम स्क्रोबीकुलेटुम एवं इलुसिन कोराकाना फसलों के साथ चक्रन में महत्वपूर्ण उच्च कपास उपज प्रति पौधा पाया गया जो कि क्रमशः 38.7, 34.9, 33.6 व 30.0 ग्राम था। यह मान कपास–परती चक्र की तुलना में क्रमशः 59.7, 44.0, 38.6 तथा 24.0, 34.4 प्रतिशत अधिक था। न्यूनतम प्रति पौधा कपास उपज (24.2 ग्राम) कपास–परती चक्र के खेतों में दर्ज की गई। बाजरे केसाथ फसल चक्रन करने से बीज उपज रूई उपज, औटाई प्रतिशत, रूई लंबाई 2.5 प्रतिशत परिपक्वता मान, समानता मान, माइक्रोनेयर, तंतु मजबूती, तंतु दीधीर्करण एवं तंतु गुणवत्ता मानों में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं दर्ज किया गया।

के. शंकरनारायणन व पी. नलायनी

परभक्षी कोकीनिलिड भृंग की इल्ली ड्रोसिचा प्रजाति पर चरती हुई | परभक्षी लेडीबर्ड भृंग का कोष को कीनिलिड भृंग का बाद की कोषीय अवस्था | परभक्षी कोकीनिलिड भृंग का वयस्क नर व मादा

कार्मिक

पदत्याग/सेवा निवृत्तिः

श्रीमती प्रतिक्षा माई, वैज्ञानिक (जैव–प्रौद्योगिकी), फसल सुधार विभाग, सीआईसीआर, नागपुर ने फरवरी 15, 2012 को पदत्याग किया।

श्री. पी. पी. भजनी, टी–9, सीआईसीआर, नागपुर 29, फरवरी, 2012 को सेवा निवृत्त हुए।

श्री. एम. कंगराजन, टी (7–8), सीआईसीआर, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबतूर 29, फरवरी, 2012 को सेवा निवृत्त हुए।

स्थानांतरण/कार्य ग्रहण

श्री. जी. एम. वाकोडकर, सहायक का स्थानांतरण एएओ के पद पर एनआरसी गार्लिक एं ओनियन, पुणे के लिए 30, सितंबर, 2011 को हुआ।

श्री. कामराजू गड्डा वेदव्यास, आशुलीपिक ग्रेड–।। नें सीआईसीआर, नागपुर में 5, नवंबर, 2011 को कार्य ग्रहण किया।

श्री. आर. राजेन्द्रन, टीएसएल, कुशल सहायक कर्मचारी नें सीआईसीआर, क्षेत्रीय स्टेशन कोयंबतूर में 11, नवंबर, 2011 को कार्य ग्रहण किया।

श्री. सतबीर सिंह, श्री.राम चन्द्रर, श्री. नरेश कुमार व श्री. भूरा राम, टीएसएल, कुशल सहायक कर्मचारी नें सीआईसीआर, क्षेत्रीय केन्द्र सिरसा में 14, नवंबर, 2011 को कार्य ग्रहण किया।

निधन सूचना

श्री. बहादुर सिंह, कुशल सहायक कर्मचारी, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केन्द्र, सिरसा का निधन 5, दिसंबर, 2011 को हुआ।

मानव संसाधन विकास

डॉ. विश्लेष नगरारे, वैज्ञानिक एसएस (कृषि रोगविज्ञान) नें प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में संवेदक आधारित प्रौद्योगिकी व प्रयोग प्रशिक्षण में सम्मिलित हुए। यह डॉ. राज खोसला, प्राध्यापक, प्रीसीजन कृषि, मृदा एवं फसल विज्ञान विभाग, कोलोरेडो स्टेट विश्वविद्यालय, फोर्ट कोलिन्स, कोलोरेडो, यूएसए में 15 अगस्त, 2011 से 15 नवंबर 2011 (तीन माह)

आयोजित किया गया था। यह प्रशिक्षण एनएआईपी (कम्पोनेन्ट–1), भाकृअप, नई दिल्ली के द्वारा एचआरडी कार्यक्रम के अतर्गत प्रायोजित किया गया था।

बैठकों में उपस्थिति

डॉ. एम. सखनन,वैज्ञानिक (पादप प्रजनन) नें फसल सुधार हेतु आण्विक पादप प्रजनन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया इसका आयोजन, इक्रीसेट, हैद्राबाद द्वारा 7 से 8 नवंबर, 2011 को किया गया था।

डॉ. एस. बी. नंदेश्वर द्वारा ''जी–अर्बोरियम कपास में पराजीनी देशी किस्मों का कीट एवं रोग प्रतिरोधी जीन युक्त एग्रोबेक्टेरियम के द्वारा विकास'' विषय पर एक आमंत्रित व्यक्तव्य प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुतीकरण ''जैव संसाधन, इसकी विवक्षा, परिवर्तन एवं जीवित जगत के हितार्थ इसका उपयोग'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन जीव विज्ञान एवं जैवप्रौद्योगिकी विभाग, सरकारी वी वाईपीपीपी, स्वसंचालित महाविद्यालय दुर्ग, छत्तीसगढ़ द्वारा अक्तूबर 11–12, 2011 को किया गया था।

डॉ. ब्लेज डिसूजा, प्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, व डॉ. के. वेलूमोरूगेन वैज्ञानिक ने भाकृअप के ''ठोस जैविक कृषि कचरे (एगो व म्युनीसिपल) की प्लैटफार्म बैठक में भाग लिया। इसका आयोजन नास काम्पेक्स, नई दिल्ली में 13, अक्तूबर, 2011 को किया गया था।

डॉ. के. आर. क्रांति, निदेशक, सीआईसीआर, नागपुर ने ''कृषि में आर एवं डी प्रबंधन'' पर एक व्यक्तव्य नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ एडवांस स्टडीज, बैंगलोर में 16, दिसंबर, 2011 को प्रस्तुत किया। आरएनएआई प्रौद्योगिकी प्लैटफार्म नई दिल्ली के 10 वीं टास्क फोसी बैठक में 21, दिसंबर, 2011 को भाग लिया एवं डीबीटी प्रकल्प के प्रगति पर रिपोर्ट प्रस्तुत की।

डॉ. के. आर. क्रांति नें डीबीटी की टास्क फोर्स बैठक में बतौर सदस्य भाग किया। इसका आयोजन 28 से 29 दिसंबर, 2011 को हैद्राबाद में किया गया

डॉ. यू. वी. गलकाटे, एसएमएस (पशु विज्ञान) नें ''केवीके नेट एवं वी–केवीके '' के एक दिवसीय एटीआर कार्यशाला में भाग लिया। इसका आयोजन इक्रीसेट, हैद्राबाद द्वारा 20, जनवरी, 2012 को किया गया था।

श्री. गुलबीर सिंह व श्री. हरिष कुंभलकर नें ''किस्मीय शुध्दता तथ निदिशष्ट विशेष्कों का परीक्षण'' के पाँच दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण में भाग लिया, जिसका आयोजन सीआईसीआर द्वारा 31, जनवरीसे 5 फरवरी, 2012 को नागपुर में किया गया था।

डॉ. के. आर. क्रांति, निदेशक, सीआईसीआर, नागपुर नें सी–4 देशों के लिए इन्डो–अफ्रिकन समझौता की बैठक में भाग लिया, जिसका आयोजन सह–आयुक्त (टेक्सटाईल) द्वारा 6, जनवरी, 2012 को किया गया था। फिक्की, नई दिल्ली द्वारा 1, फरवरी, 2012 को आयोजित ''कपास के स्थाई उत्पादन हेतु कपास 2020 रोड मैप'' में भाग लिया। सचिव डेअर व डीजी

मासिक वैज्ञानिक बैठक

भाकृअप, नई दिल्ली की अध्यक्षता में हुअी कुलपतियों और निदेशकों के सम्मेलन, 17 से 18, फरवरी, 2012 में भाग लिया। कपास में वैश्विक उपज के समकक्ष वृध्दि करने हेतु कपास अनुसंधान एवं विकास की विशेष योजना में भाग लिया जिसका आयोजन सचिव टेक्सटाईल मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 20, मार्च, 2012 को किया गया था।

श्री. गुलबीर सिंह, नें ''फल, सब्जी, फूल व औषधीय फसलों के उत्पादन पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया। इसका आयोजन आईआईएचआर, बैंगलोर में 18 से 19, जनवरी, 2012 को किया गया था

''नींबू वर्गीय फलों में सुधार, उत्पादन व उपयोग'' पर आयोजित राष्ट्रीय वार्ता, 27`स 29, फरवरी, 2012, एनआरसीसी, नागपुर में भी भाग लिया। इसका आयोजन सिट्रीकल्चर के भारतीय सोसायटी व एनआरसीसी, नागपुर ने किया था। ''उद्यानिकी उत्पादों का विपणन'' पर एसएओ नागपुर द्वारा सिविल लाईन्स, नागपुर में आयोजि बैठक में भी भाग लिया।

मासिक वैज्ञानिक बैठकों का आयोजन डॉ. के. आर. क्रांति, निदेशक, सीआईसीआर, नागपुर की अध्यक्षता में हुआ आयोजित हुआ। इस बैठक में निम्नलिखित व्यक्तियों ने अपना वक्तव्य दिया।

डॉ. राजीव खोसला, प्राध्यापक, प्रीसीजन कृषि, कोलोरेडो राज्य कृषि विश्वविद्यालय, यूएए। इन्होंने ''प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन हेतु प्रीसीजन कृषि'' विषय पर 22, नवंबर, 2011 को वार्ता प्रस्तुत की।

डॉ. एम. जे. मादोयिल, एएसआरबी सदस्य नें ''पशु एवं मनुष्य फिलासॅपी'' पर 26, नवंबर, 2011 को वार्ता प्रस्तुत किया।

डॉ. ओ. एम. बंबावले, निदेशक, एनसीआईपीएम, नें ''पादप सुरक्षा के लिए सूचना तकनीकीयों का उपयोग'' विषय पर 1 दिसंबर, 2011 को वार्ता प्रस्तुत की।

पुरस्कार एवं सम्मान

श्रीमती सुनीता चौहान नें ''कपास चुनाई थैले द्वारा कृषक महिला के श्रम में कमी'' शीर्षक पर एक शीघ्र पत्र 16 वें राष्ट्रीय विस्तार शिक्षा कांग्रेस में प्रस्तुत किया जिसका आयोजन गोवा में भाकृअप के अनुसंधान में 17 से 19, दिसंबर, 2011 को किया गया था। इस शोध पत्र के लिए इन्हें सर्वोत्तम शोध पत्र पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अंग्रेजी अंक संकलन एवं संपादनः डॉ. नंदिनी गोक्टे (प्रधान वैज्ञानिक)
प्रस्तुति एवं प्रकाशन डॉ. केशव क्रांति, निदेशक
हिन्दी संस्करण : निर्माण एवं संपादनः रजनी कान्त चतुर्वेदी
ग्रफिक सहयोगः संगिता औरंगाबादकर
केंन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान पोस्ट बैग क्र.. 2, शंकर नगर पोस्ट आफिस, नागपुर दूरभाष : 07103–275536/275538 फैक्स : 07103–275529
ग्राम कपास संस्थान, ईमेल समाचार cicrnagpur@gmail.com वेब साईट www.cicr.org.in पर भी अपलब्ध